

रुद्रयामलोकतामृतीकरणप्रयोग

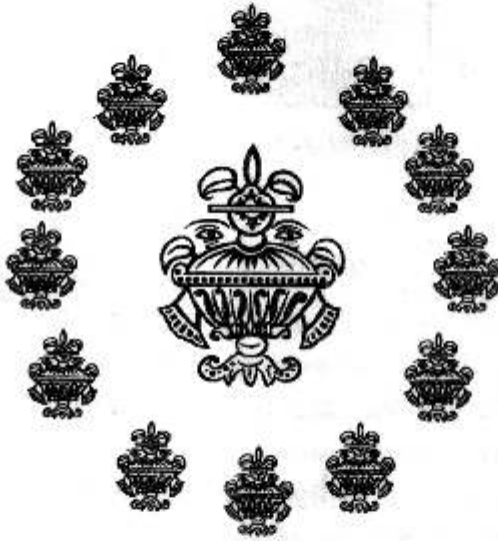
हिन्दी अनुवाद सहित
(द्वादश कुम्भस्थान विवेचन)



अनुवादक एवं सम्पादक
डा० विद्येश्वर झा
डा० श्रवण कुमार चौधरी

शुद्धयामलौकतीमृतीकरणप्रयोग

हिन्दी अनुवाद सहित
(द्वादश कुम्भस्थान विवेचन)



अनुवादक एवं सम्पादक
डा० विद्येश्वर झा
डा० श्रवण कुमार चौधरी

प्रकाशक : डा० विद्येश्वर झा
डा० श्रवण कुमार चौधरी
वेद एवं साहित्य विभाग
का०सि०द०सं० विश्वविद्यालय
दरभंगा
चल दूरभाष : 9006998790, 9430849752

प्रकाशन वर्ष : 2011

सर्वाधिकार : लेखकाधीन

मुद्रित प्रतियाँ : 500

मूल्य : 60 (साठ रुपये) मात्र

मुद्रक : रमण प्रेस, दरभंगा (बिहार)

Some relevant portion
quoted from the book

ध्याननिष्ठ महर्षि जहनु को देखकर, जो दैत्यों के महान् घोर कोलाहल शब्द से जग गये थे, क्योंकि ध्यान भंग हो जाने के कारण क्रुद्ध हो गये थे, उस मुनि के शाप की आशंका से ग्रस्त भयाक्रान्त दैत्यगण फिर गंगा के उत्तर में आ गये । ॥५२-५७॥

किञ्चिद्दूरन्ततो गत्वा गहनं शाल्मलीवनम् ।

वीक्ष्य तस्थुर्बलिमुख्याः गङ्गा यत्रोत्तरां गता । ॥५८॥

वहाँ कुछ दूर जाने के बाद गहन सेमरवन (शाल्मलीवन) को देखकर बलि जिनके प्रधान थे वे असुरगण वहीं ठहर गये, जहा गंगा उत्तर वाहिनी थी । ॥५८॥

मायया देवदेवस्य विष्णोरतुलतेजसः ।

दैत्याः विमोहिताः सर्वे कुम्भं संस्थाप्य ननृतुः । ॥५९॥

देवाधिदेव भगवान् विष्णु की माया से वे सभी दैत्यगण विमोहित होकर वहीं अमृतकुम्भ को रखकर नृत्य करने लगे । ॥५९॥

जगुर्गीतं जयमिश्रमुच्चैः शाल्मलीवने ।

तत्रैवामृतपानाय बभूवुर्हतबुद्धयः । ॥६०॥

वहीं सेमरवन (शाल्मलीवन) में वे दैत्यगण गीत गान करने लगे बीच-बीच में जोड़ से जयकार शब्द करने लगे । अमृत पान के लिये सभी हतबुद्धि हो गये । ॥६०॥

एतस्मिन्नन्तरे काले विष्णुर्नारायणः स्वयम् ।

मोहिनीरूपमासाद्य ययौ दैत्यान् विमोहितान् । ॥६१॥

इस समय में स्वयं व्यापक श्री मन्नारायण ने मोहिनी का रूपधारण कर विमोहित दैत्यों के पास गये । ॥६१॥

सर्वलक्षणसम्पन्नां भासयन्तीं दिशं त्विषा ।

विचरन्तीं वने दृष्ट्वा स्तनभारभराकुलाम् । ॥६२॥

सभी महिलोचित गुणों से परिपूर्ण अपने प्रकाश से दिशाओं को प्रकाशित करती हुई, स्तनद्वय के भार से व्यग्र सेमरवन में विचरण करती हुई मोहिनी को दैत्यों ने देखा । ॥६२॥

तामेकां सुन्दरीं तत्र गहने शाल्मलीवने ।

विस्मयेन समाविष्टा बभूवुस्तृषितेक्षणाः । ॥६३॥

उस गहन शाल्मली (सेमर) वन में एकमात्र उस सुन्दरी को देखकर आश्चर्य

से चकित रूपलावण्य के पिपासु बन गये । ॥६३॥

तां सम्मान्य तदा दैत्यराजो बलिरुवाच ह ।

सुधा त्वया विभक्तव्या सर्वेषां सममेव च । ॥६४॥

तब दैत्यराज बलि ने उस मोहिनी को सम्मानित कर कहा कि हम सबों में अमृत का बँटवारा समान रूप से तुम्हीं करो । ॥६४॥

शीघ्रं त्वं महाभागे कुरुष्व वचनं मम ।

विष्णोर्माया भगवती तदोवाच बलिं प्रति । ॥६५॥

हे महाभागे ! तुम शीघ्र ही मेरे बच्चों का पालन करो । व्यापक भगवान की माया-मोहिनी ऐसा सुनने के बाद बलि को कहा । ॥६५॥

दिव्यममृतपानन्तु कर्तव्यं नाद्य भूपते ।

वर्णाश्रमाणां धर्माणां पालयद्भिर्महाजनैः । ॥६६॥

हे भूपते ! वर्णाश्रमधर्म का पालन करने वाले आप श्रेष्ठपुरुषों को आज के दिन दिव्य अमृत का पान नहीं करना चाहिये । ॥६६॥

अद्योपवासः कर्तव्यः सुधापानसमुत्सुकैः ।

रात्रौ जागरणं कृत्वा स्नातव्यं स्वर्णदीजले । ॥६७॥

सुधा पान के समुत्सुकों को आज उपवास करना चाहिये और रात्रि में जागरण करके गंगा नदी में स्नान करना चाहिये । ॥६७॥

ततः पारणरूपेण पानं कार्यं महाशयैः ।

एवं विष्णोर्वचः श्रुत्वा बलिर्द्रैत्यपतिः सुधीः । ॥६८॥

आज्ञापयामास मयं कर्तुं प्रासादसंहतिम् ।

क्षणान्मयासुरस्तत्र गङ्गायाश्चोत्तरे तटे । ॥६९॥

चकार नगरं रम्यं शाल्मलीवनसंस्थितम् ॥७०॥

उसके बाद पारण के रूप में आप महाशयों को अमृतपान करना चाहिये । इस प्रकार मोहिनी रूप विष्णु का वचन सुनकर दैत्यों के पालक बुद्धिमान बलि ने मयदानव को अट्टालिकाओं का समूह (नगर) बनाने की आज्ञा दी, और वहीं गंगा के उत्तरतट पर कुछ ही क्षणों में मयदानव ने-

शाल्मलीवन (सेमरवन) में स्थित रमणीय नगर का निर्माण किया । ॥ (६८-७०)

नद्यास्तीरं समाश्रित्य स्नानं कुर्याद् विचक्षणः ।

अस्मिन्नमृतयोगे तु स्नात्वा तीर्थे फलं महत् । ॥१२०॥

उसके बाद सूर्य और चन्द्रमा तूलराशि का आश्रय लेकर गुरु को कहा । और गुरु ने इस सप्तम राशिस्थ राहु के सभी संचार को जान कर विष्णु को इसकी जानकारी के लिये कहा कि -सूर्य के साथ चन्द्रमा का योग जब शुभ कृष्णपक्ष की त्रयोदशी तिथि में होता है तब अमृतयोग कहलाता है । हे प्रिये ! उस समय नदी के तीर का आश्रय लेकर बुद्धिमान को स्नान करना चाहिये । इस अमृतयोग में तीर्थ में स्नानकर महान् फल को प्राप्त करता है । ॥११८-१२०॥

गुरोरपि यदा योगस्तस्य पुण्यं न वर्ण्यते ।

मासं यावद् भवेत्तीर्थं तदामृतमयं शुभे । ॥१२१॥

इसमें यदि गुरु का भी योग हो तब तो उस पुण्य का वर्णन नहीं किया जा सकता है । हे सुन्दरी! ऐसे योग में मास पर्यन्त वह तीर्थ अमृतमय हो जाता है । ॥१२१॥

देवाश्चागत्य मज्जन्ति तत्र मासं वसन्ति च ।

तस्मिन् स्नानेन दानेन पुण्यमक्षय्यमाप्नुयात् । ॥१२२॥

ऐसे योग में देवगण मासपर्यन्त उस तीर्थ में स्नान करते हैं और वहाँ निवास करते हैं । उस योग में स्नान-दान से मनुष्य अक्षय्य पुण्य को प्राप्त करता है । ॥१२२॥

सिंहे युतौ च रेवायां मिथुने पुरुषोत्तमे ।

मीने ब्रह्मपुत्रे च तव क्षेत्रे वरानने । ॥१२३॥

सिंह राशि में ऐसा योग होने पर रेवा में, मिथुन राशि में पुरुषोत्तम क्षेत्र जगन्नाथपुरी में, मीनराशि में ब्रह्मपुत्र में (गुवाहाटि में) हे वरानने ! जो तुम्हारा क्षेत्र (कामाख्या) है उसमें । ॥१२३॥

धनुराशि स्थिते भानौ गंगासागर संगमे ।

कुम्भराशौ तु काबेर्या तुलार्के शाल्मलीवने । ॥१२४॥

वृश्चिके ब्रह्मसरसि कर्कटे कृष्णशासने ॥

कन्यायां दक्षिणे सिन्धौ यत्राहं रामपूजितः ॥

अथाप्यन्योऽपि योगोऽस्ति यत्रस्नानं सुधोपमम् । ॥१२५॥

जब सूर्य धनुर्देशस्थ होते हैं तब गंगा और सागर के संगम में, कुम्भ राशि में सूर्य के रहने पर कावेरी में, तुलार्क में शाल्मलीवन में (सेमरिया), वृश्चिकराशि में ब्रह्मसरोवर (कुरुक्षेत्र) में, कर्कराशि में कृष्णशासन (द्वारकापुरी) में, कन्याराशि में दक्षिण सिन्धु (रामेश्वरम्) में, जहाँ मैं राम के द्वारा पूजित हूँ और अन्य भी योग हैं जिसमें स्नान अमृतोपम होता है । ॥१२४-१२५॥

मेषराशिस्थिते भानौ कुम्भे च गुरौ स्थितौ ।

गंगाद्वारे भवेद्योगो भुक्तिभुक्तिप्रदः शिवे । ॥१२६॥

मेष राशिगत सूर्य रहने पर और कुम्भराशिगत गुरु होने पर हे शिवे ! गंगाद्वार में यह योग होता जो भोग और मोक्ष प्रदान करता है । ॥१२६॥

मेषेगुरौ तथा देवि मकरस्ये दिवाकरे ।

त्रिवेण्यां जायते योगः सद्योऽमृतफलं लभेत् । ॥१२७॥

हे देवि ! मेष राशि में गुरु और मकर राशि में सूर्य के रहने पर यह योग त्रिवेणी संगम पर होता है, जो सद्यः अमृतफल देनेवाला होता है । ॥१२७॥

शिप्रायां मेषगे सूर्ये सिंहस्थे च बृहस्पतौ ।

मासं यावन्नरः स्थित्वामृतत्त्वयान्तं दुर्लभम् । ॥१२८॥

मेषगत सूर्य के होने पर और सिंहस्थ बृहस्पति के होने पर शिप्रा में यह योग मास पर्यन्त रहता है वहाँ मास पर्यन्त रह कर लोग दुर्लभ अमृतत्व को प्राप्त करता है । ॥१२८॥

पार्वत्युवाच

कथमेताः महापुण्याः नद्यो योगेषु भाषिताः ।

तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो देव नमोऽस्तु ते । ॥१२९॥

पार्वती बोली

हे देव ! आपको नमस्कार हो, कैसे ये नदियाँ इन योगों में महापुण्या कहीं गई हैं, वह सब मैं आपसे सुनना चाहती हूँ । ॥१२९॥

ईश्वर उवाच

सुधावितरणे देवि घटारूढे गुरावपि ।

विष्णुर्दृष्टवान् क्षिप्रं राहुञ्च देवमध्यगम् । ॥१३०॥

ईश्वर ने कहा

हे देवि! अमृत के बँटवारे के समय में गुरु को भी घट (कुम्भ) पर आरूढ़ होने के कारण शीघ्र ही विष्णु ने देवों के मध्य में राहु को देखा । ॥१३०॥

चमसं सुधया पूर्णं धारयन् दक्षिणे करे ।

राहोश्चाग्रस्थिते पात्रेऽमृतं वीक्ष्य च शाश्वतम् । ॥१३१॥

विष्णुरादेशयाँचक्रे चक्रं नाम सुदर्शनम् ।

छिन्धिच्छिन्धीति शब्दोऽभूत् पद्मापतिमुखाग्रतः । ॥१३२॥

उस समय विष्णु ने सुधा से पूर्ण चमस को (परिवेषण पात्र) दाहिने हाथ में धारण करते हुए राहु को आगे में स्थित और शाश्वत अमृत को देख कर सुदर्शन नाम से प्रसिद्ध चक्र को आदेशित किया । उसी समय पद्मापति नारायण के सामने 'मारो' 'काटो' (धिन्धि, भिन्धि) यह शब्द होने लगा । ॥१३१-१३२

चक्रश्च तं द्विधा चक्रे यावत्पिबति सोऽमृतम् ।

तथाप्यमृतलेशस्तु कण्ठे जातः क्षणेन हि । ॥१३३॥

विष्णु के चक्र ने उसी समय जब राहु अमृत पी रहा था राहु को दो टुकरे में विभक्त कर दिया । फिर भी अमृत के कुछ अंश कुछ क्षण में उसके कण्ठ में चला गया । ॥१३३॥

राहोः कबन्धः सहसा दधावोत्थाय मोहिनीम् ।

विष्णुश्चाप्यसुरोत्पातान् वीक्ष्य दैत्यकृतान् तदा । ॥१३४॥

चमसं दक्षिणे हस्ते वामे कुम्भं गुणोज्ज्वलम् ।

द्वित्राणां देवमुख्यानामंश आसीत्तदा घटे । ॥१३५॥

आरुरोह वैनतेये ततो दिव्युत्पपात ह ।

कलशन्तु विचिक्षेप तत्रैव जाह्नवीजले । ॥१३६॥

उस समय राहु का कबन्ध (शिर कटा शरीर) सहसा उठकर मोहिनी को दबोचा, विष्णु ने भी दैत्यों के द्वारा मचाये गये उत्पात को (भयानक युद्ध को) देख कर-

जिस घट में केवल दो-तीन प्रमुख देवों के देने योग्य कुछ अंश बचे थे उस कुम्भ को जो गुणों से उज्ज्वल लग रहे थे बाएं हाथ में धारण कर और चमस को

(परिवेषण पात्र को) दाएं हाथ में धारण करके विनता नन्दन गुरुद्व पर चढ़कर ऊपर की ओर छलांग लगा दिया और अमृत कलश को (कुम्भ को) वहीं जाह्नवी जल में प्रक्षिप्त कर दिया । ॥१३४-१३६॥

ऋषीणां पितृणाञ्चैव मुनीनाञ्चैव देहिनाम् ।

सुधापानार्थमुद्दिश्य कुम्भन्तत्रोत्ससर्ज ह । ॥१३७॥

ऋषियों, पितरों, मुनियों और देहधारियों को सुधापान के उद्देश्य से उस कुम्भ को विष्णु ने वहीं छोड़ दिया । ॥१३७॥

तस्मात् शाल्मलीतीर्थे जलमस्ति सुधामयम् ।

चमसे यदमृतं देवि तद्देशेषु पपात ह । ॥१३८॥

इसलिये शाल्मली वन में (सेमरिया में) जाह्नवीजल सुधामय है, और हे देवि! चमस में (करछुल में) जो अमृत था उसको दूसरे-दूसरे स्थानों में गिराया । ॥१३८॥

तस्मादेतेषु तीर्थेषु जलं नद्याः सुधोपमम् । ॥१३९॥

इसलिये तत्तत् तीर्थों में नदी का जल अमृत के समान है । ॥१३९॥

पार्वत्युवाच

ततः किमकरोद्राहुः किञ्चित्पीतसुधालवः ।

दैत्याश्चामृतपानाद्धि वञ्चिताः परमेश्वर । ॥१४०॥

पार्वती बोली

उसके बाद राहु ने जो थोड़ा सा अमृत का कण पी लिया था; क्या किया ? और हे परमेश्वर ! अमृत पान से वंचित दैत्यों ने उसके बाद क्या किया । ॥१४०॥

ईश्वर उवाच

राहोः कबन्ध उत्प्लुत्य शान्तोऽभूदेवसन्निधौ ।

कण्ठादूर्ध्वं तु लोकेस्मिन्नमरः कण्ठगतामृतात् । ॥१४१॥

ईश्वर ने कहा

राहु का जो कबन्ध (शिर विहीन शरीर) था वह देवताओं के सानिध्य में शान्त हो गया और कण्ठ से ऊपर का भाग कण्ठगत अमृत के होने से इसलोक में अमर हो गया । ॥१४१॥

यस्मिन्क्षे स्थितो भानुस्तस्मिन् यद्यमा भवेत् ।

तदामान्ते दिनकरं राहुर्वै ग्रसति ध्रुवम् । ॥१४२॥



- * नाम :- प्रो० विद्येश्वर झा
- * पितृनाम :- पं० श्री राजेश्वर झा
- * पता :- ग्राम+पत्रालय-सिसवार (बाजार)
जिला- मधुबनी (बिहार)
- * शिक्षा :- व्याकरण, ऋग्वेद, यजुर्वेद,
साहित्याचार्य, एम.ए (संस्कृत)
विद्यावारिधि

* प्रकाशित ग्रन्थ:-

1. शु.य.वेद संहिता (तृतीयाध्यापर्यन्ता)'मञ्जुला'
संस्कृत व्याख्या, राजेश्वरी हिन्दुनुवाद सहिता।
2. वैदिक समाज और आचार-विचार समीक्षा

* अन्य प्रकाशित निबन्ध:-

लगभग 12 विविध पत्रिकाओं में संस्कृत,
हिन्दी, मैथिली भाषाओं में । आकाशवाणी
द्वारा समय-समय पर विविध संस्कृत वार्ता
प्रसारित ।

- * अभिरूचि :- अध्यापन एवं लेखन ।
- * सेवाकार्य :- 01.04.82 से 05.03.09 तक
लगामा, 06.03.2009 से स्नात० वेद विभाग, का.
सिं.द.सं.वि.वि. में प्राचार्य (विभागाध्यक्ष एवं
संकायाध्यक्ष) पद पर कार्यरत

* चलदूरभाष :-9006998790

- * नाम :- डा० अरुण कुमार चौधरी
- * पितृनाम :- स्व. प. हरिकान्त चौधरी
- * पता :- ग्राम- चानपुर, पो.-धनुषी-चानपुर
द्वार-बसैठ चानपुर, जिला-मधुबनी (मिथिला)
- * दूरभाष :- 9430849752
- * जन्म तिथि :- 12.11.1952
- * योग्यता:-एम.ए (मैथिली) आचार्य (साहित्य)

पी-एच.डी 1986 (बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

* पद:- 21.02.1978 से स्नातकोत्तर साहित्य
विभाग में व्याख्याता एवं 21.08.1988 से
उपाचार्य के पद पर कार्यरत, का.सिं.द.सं.वि.
वि., दरभंगा

* समन्वयक राष्ट्रीय सेवा योजना, का.सिं.द.
सं.वि.वि, दरभंगा 14.08.96 से 30.06.2009
तक ।

* उपाध्यक्ष :- मिथिलांचल विकास परिषद,
लहेरियासराय, दरभंगा ।

* प्रकाशित रचना :- प्रथम । इसके
अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिका में विद्या वैविध्य
में 30 से उपर रचना प्रकाशित ।

* निवास:- कुमार भवन, नया गंगासागर,
दरभंगा ।